वर्तमान समय के लिए सूरदास जी की भविष्य वाणी

रे मन धीरज क्यों न धरे ।
सम्वत दो हजार के ऊपर ऐसा जोग परे । ।
पूरब पशिचम उत्तर दक्षिण चहुं दिशा काल फिरे ।
अकाल मृत्यु जग माही व्यापै परजा बहुत मरै । ।
स्वर्ण फूल वन पृथ्वी फूले धर्म की बेल बढ़े ।
सहस्र वर्ष लगि सतयुग व्यापे सुख की दया फिरे । ।
काल जाल से वही बचेगा जो गुरू का ध्यान धरे ।
सूरदास यह हरि की लीला , टारे नाहि टरे । ।